International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-07-2026, Accepted: 05-08-2026, Published: 20-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 274-278

अकाल, राहत और सामाजिक पुनर्गठन: 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत के जनजीवन में राज्य की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. रीतू चौधरी
सहायक आचार्य, गेस्ट फैकल्टी इतिहास विभाग, एस.पी.एम. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपालगढ़, जोधपुर, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12290

सारांश
मारवाड़ रियासत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास उसके शुष्क भौगोलिक परिवेश तथा वर्षा–आधारित कृषि व्यवस्था से गहरे रूप में जुड़ा हुआ था। 20वीं सदी में अकाल केवल खाद्यान्न की कमी की प्राकृतिक घटना नहीं था, बल्कि उसने कृषि, पशुधन, रोजगार, ग्रामीण ऋण, प्रवास, सामाजिक संबंधों और राज्य–प्रजा संबंधों को भी प्रभावित किया। इस शोध का उद्देश्य 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत में अकाल की परिस्थितियों, राज्य द्वारा अपनाए गए राहत उपायों तथा इन उपायों के परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों का ऐतिहासिक अध्ययन करना है। अध्ययन में विशेष रूप से 1899–1900 के अकाल की पृष्ठभूमि, 1920 के दशक के अकाल तथा 1930–40 के दशक में उत्पन्न दीर्घकालिक सूखा–अकाल परिस्थितियों को व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में देखा गया है। 1899–1900 के अकाल में जोधपुर राज्य को राजपूताना के सबसे गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों में गिना गया और फरवरी 1900 में एक लाख दस हजार से अधिक व्यक्ति अकाल राहत प्राप्त कर रहे थे।
महाराजा उमेद सिंह के काल में अकाल–राहत की प्रकृति में सार्वजनिक निर्माण तथा रोजगार–आधारित राहत का महत्व दिखाई देता है। उमेद भवन के निर्माण को भी 1920 के दशक की अकाल परिस्थितियों से जोड़कर देखा जाता है; उपलब्ध स्रोतों के अनुसार 1923 में जोधपुर अकाल से प्रभावित था और बाद में रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस परियोजना को आरंभ किया गया। 1938–42 के दौर में अकाल और ग्रामीण असंतोष का संबंध और स्पष्ट हुआ। भारत सरकार के डिजिटल जिला अभिलेख के अनुसार पाँच वर्ष तक चले सूखे और उसके बाद उत्पन्न गंभीर अकाल ने मारवाड़ में राजनीतिक चेतना को भी प्रभावित किया तथा मारवाड़ लोक परिषद ने राहत की अपर्याप्तता, जागीरदारों के शोषण और ग्रामीण समस्याओं को राजनीतिक मुद्दों से जोड़ा। इस प्रकार अकाल–राहत को केवल तत्कालीन सहायता के रूप में नहीं, बल्कि राज्य की प्रशासनिक क्षमता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सामाजिक पुनर्गठन और राजनीतिक चेतना के विकास की प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

मुख्य शब्द: मारवाड़, जोधपुर रियासत, अकाल, राहत कार्य, पशुधन, ग्रामीण समाज, उमेद सिंह, जागीरदारी व्यवस्था, सामाजिक पुनर्गठन।

प्रस्तावना
राजस्थान के पश्चिमी भाग का ऐतिहासिक विकास उसकी भौगोलिक एवं जलवायु संबंधी विशेषताओं से अत्यंत प्रभावित रहा है। मारवाड़ क्षेत्र में वर्षा की अनिश्चितता, विस्तृत मरुस्थलीय भूभाग, सीमित जल संसाधन तथा वर्षा–आधारित कृषि ने यहाँ के समाज को लंबे समय तक पर्यावरणीय जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाए रखा। ऐसी परिस्थितियों में अकाल का अर्थ केवल खेतों में फसल का नष्ट होना नहीं था। फसल विफल होने पर किसान की आय कम होती थी, पशुओं के लिए चारे की कमी उत्पन्न होती थी, अनाज के मूल्य बढ़ते थे, ग्रामीण ऋण बढ़ता था और रोजगार के अवसर घटते थे। फलतः अकाल का प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर अलग–अलग रूप में पड़ता था। मारवाड़ में यह समस्या इसलिए भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि के साथ–साथ पशुपालन पर अत्यधिक निर्भर थी। आधुनिक अकाल–अध्ययन भी यह दर्शाता है कि पशुधन की क्षति केवल तत्काल आर्थिक नुकसान नहीं होती, बल्कि उससे कृषि उत्पादकता, ग्रामीण संपत्ति और भविष्य की आजीविका पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है। इस शोध में अकाल को प्राकृतिक आपदा के बजाय प्राकृतिक संकट, आर्थिक असुरक्षा, प्रशासनिक प्रतिक्रिया , सामाजिक परिवर्तन की संयुक्त प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य
प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत में अकाल, राहत–व्यवस्था तथा उसके परिणामस्वरूप हुए सामाजिक पुनर्गठन का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है—

- 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत में अकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना– मारवाड़ की भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितियों का अध्ययन करना, जिन्होंने क्षेत्र को बार–बार सूखा और अकाल की स्थिति के प्रति संवेदनशील बनाया। 20वीं सदी के प्रमुख अकालों की पहचान एवं उनका कालक्रम निर्धारित करना। वर्षा की अनियमितता, कृषि–व्यवस्था, जल–स्रोतों की उपलब्धता तथा खाद्यान्न उत्पादन के अकाल से संबंध को समझना। अकाल के दौरान ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- अकाल के ग्रामीण समाज पर पड़ने वाले सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना–अकाल के कारण किसानों, खेतिहर मजदूरों, पशुपालकों तथा ग्रामीण कारीगरों की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना। खाद्यान्न की कमी, मूल्य–वृद्धि और रोजगार के संकट के प्रभावों का विश्लेषण करना। अकाल के कारण ग्रामीण परिवारों की जीवन–शैली, सामाजिक संबंधों और पारंपरिक व्यवस्थाओं में हुए बदलावों का अध्ययन करना। निर्धन एवं कमजोर सामाजिक समूहों पर अकाल के अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव का विश्लेषण करना। मारवाड़ राज्य द्वारा अपनाई गई अकाल राहत नीतियों का अध्ययन करना– अकाल की सूचना प्राप्त होने से लेकर राहत कार्य प्रारंभ करने तक राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया का अध्ययन करना। राज्य द्वारा अपनाए गए राहत नियमों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं राहत अधिकारियों की भूमिका का विश्लेषण करना। राहत नीति में

राजकीय खजाने, स्थानीय प्रशासन तथा जागीरदारों की भूमिका को समझना। विभिन्न अकालों के दौरान राज्य की राहत नीतियों में आए परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- राहत कार्यों में रोजगार एवं सार्वजनिक निर्माण की भूमिका का अध्ययन करना– अकाल के समय बेरोजगार ग्रामीणों को उपलब्ध कराए गए रोजगार के स्वरूप का अध्ययन करना। सड़क, तालाब, कुएँ, बांध, नहर तथा अन्य सार्वजनिक निर्माण कार्यों को राहत के साधन के रूप में समझना। राहत कार्यों में मजदूरी की प्रकृति तथा भुगतान व्यवस्था का अध्ययन करना। यह विश्लेषण करना कि अकाल राहत के नाम पर किए गए सार्वजनिक निर्माण कार्यों ने दीर्घकाल में ग्रामीण आधारभूत संरचना को किस सीमा तक प्रभावित किया।
- खाद्यान्न एवं पशु–राहत व्यवस्था का अध्ययन करना–अकाल के दौरान खाद्यान्न की उपलब्धता, वितरण एवं सरकारी सहायता का अध्ययन करना। अनाज के मूल्य और बाजार व्यवस्था पर अकाल के प्रभाव को समझना। पशुधन के लिए चारा, पानी तथा अन्य सहायता की व्यवस्था का अध्ययन करना। मारवाड़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन के महत्व को देखते हुए पशु–राहत की भूमिका का विश्लेषण करना। पशुधन की हानि के कारण किसानों एवं पशुपालकों की आर्थिक स्थिति पर पड़े दीर्घकालीन प्रभावों का अध्ययन करना।
- अकाल और ग्रामीण प्रवास के संबंध को समझना–अकाल के कारण ग्रामीण आबादी द्वारा अन्य क्षेत्रों की ओर किए गए प्रवास का अध्ययन करना। रोजगार, भोजन, पानी एवं पशुओं के लिए चारे की तलाश में होने वाले मौसमी एवं दीर्घकालीन प्रवास की प्रकृति को समझना। प्रवास के कारण परिवार एवं ग्राम–समुदाय की सामाजिक संरचना में आए बदलावों का अध्ययन करना। प्रवास के गंतव्य क्षेत्रों तथा मारवाड़ से बाहर जाने वाली जनसंख्या के संबंध का विश्लेषण करना।
- अकाल के संदर्भ में राज्य तथा प्रजा के बदलते संबंधों का विश्लेषण करना–अकाल के समय प्रजा की राज्य से अपेक्षाओं का अध्ययन करना। राहत उपलब्ध कराने में राज्य की भूमिका के प्रति ग्रामीण समाज की धारणा को समझना। राहत की उपलब्धता अथवा अपर्याप्तता से राज्य की वैधता एवं लोकप्रियता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना। अकाल को राज्य और प्रजा के बीच संबंधों में परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कारक के रूप में देखना।
- 1930–40 के दशक में अकाल और ग्रामीण राजनीतिक चेतना के संबंध का अध्ययन करना–1930–40 के दशक में अकाल, कृषि संकट एवं ग्रामीण असंतोष के बीच संबंधों का अध्ययन करना। किसानों एवं ग्रामीण समुदायों में अपने अधिकारों के प्रति विकसित होती चेतना का विश्लेषण करना। अकाल एवं आर्थिक कठिनाइयों से संबंधित जन–असंतोष के राजनीतिक अभिव्यक्तियों का अध्ययन करना। मारवाड़ में विकसित हो रही किसान एवं जन–आंदोलन की चेतना में आर्थिक संकट की भूमिका को समझना।
- अकाल राहत और सामाजिक पुनर्गठन के संबंध का विश्लेषण करना– राहत कार्यों के कारण ग्रामीण समाज में उत्पन्न नए आर्थिक एवं सामाजिक संबंधों का अध्ययन करना। सार्वजनिक निर्माण, रोजगार एवं प्रशासनिक हस्तक्षेप से ग्रामीण जीवन में आए बदलावों का विश्लेषण करना। अकाल के बाद ग्रामीण समुदायों की आजीविका के नए साधनों के विकास का अध्ययन करना। यह देखना कि राहत व्यवस्था तत्काल संकट से निपटने तक सीमित रही या उसने दीर्घकालीन सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन को भी प्रभावित किया।
- राज्य की अकाल–नीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना–राज्य द्वारा घोषित राहत उपायों और उनके वास्तविक क्रियान्वयन के बीच अंतर का अध्ययन करना। राहत की पहुंच, पर्याप्तता एवं प्रशासनिक दक्षता का मूल्यांकन करना। विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों तक राहत की पहुंच की तुलना करना। यह निर्धारित करना कि राज्य की नीतियाँ अकाल के तत्काल प्रभावों को कम करने में कितनी प्रभावी रहीं।
- अकाल, कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करना–अकाल के कारण कृषि उत्पादन में आई गिरावट का अध्ययन करना। किसानों की ऋणग्रस्तता, भूमि संबंधों तथा आजीविका पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण करना। कृषि एवं पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था में आए बदलावों को समझना। अकाल के बाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

दीर्घकालीन सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझना– अकाल और राहत नीतियों के तत्काल तथा दीर्घकालीन परिणामों की पहचान करना। ग्रामीण समाज में रोजगार, प्रवास, कृषि, पशुपालन और सामाजिक संबंधों में आए स्थायी परिवर्तनों का अध्ययन करना। मारवाड़ की ग्रामीण संरचना में राज्य के बढ़ते हस्तक्षेप की ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझना। अंततः यह स्थापित करना कि अकाल केवल प्राकृतिक आपदा नहीं था, बल्कि उसने राज्य, अर्थव्यवस्था और ग्रामीण समाज के पारस्परिक संबंधों को भी प्रभावित किया। इस प्रकार प्रस्तुत शोध का व्यापक उद्देश्य यह समझना है कि 20वीं सदी के मारवाड़ में अकाल ने केवल खाद्यान्न और रोजगार का संकट ही उत्पन्न नहीं किया, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्रवास, सामाजिक संबंधों, राज्य–प्रजा संबंधों तथा राजनीतिक चेतना को भी प्रभावित किया। साथ ही, राज्य द्वारा संचालित राहत नीतियों ने तत्कालीन संकट को कम करने के साथ–साथ मारवाड़ के ग्रामीण समाज के पुनर्गठन में किस प्रकार योगदान दिया, इसका ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना इस शोध का केंद्रीय उद्देश्य है।

शोध–पद्धति एवं स्रोत

प्रस्तुत शोध "अकाल, राहत और सामाजिक पुनर्गठन: 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत के जनजीवन में राज्य की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन" विषय पर आधारित है। अध्ययन के लिए ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं स्रोत–आलोचनात्मक पद्धति को अपनाया गया है। शोध में अकाल को केवल प्राकृतिक आपदा के रूप में न देखकर उसके सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं राजनीतिक प्रभावों का समग्र अध्ययन किया गया है। विभिन्न कालखंडों में अकाल की परिस्थितियों, राज्य की राहत नीतियों तथा ग्रामीण समाज पर पड़े प्रभावों की तुलना करते हुए राज्य और प्रजा के बदलते संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मारवाड़ राज्य के प्रशासनिक प्रतिवेदन, अकाल संबंधी सरकारी रिपोर्टें, राज्य के बजट एवं वित्तीय दस्तावेज, जनगणना रिपोर्टें, ग्राम निर्देशिकाएँ, राजस्व एवं कृषि संबंधी अभिलेख तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग के दस्तावेज प्रमुख हैं। विशेष रूप से 1931 की मारवाड़ राज्य जनगणना, मारवाड़ राज्य की ग्राम निर्देशिका तथा 1939 में जोधपुर राजकीय प्रेस से प्रकाशित Famine Programme Report, Jodhpur Government इस अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन स्रोतों के माध्यम से अकाल की स्थिति, प्रभावित जनसंख्या, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, राहत कार्य, रोजगार, खाद्यान्न एवं पशु–राहत तथा राज्य के वित्तीय हस्तक्षेप का अध्ययन किया गया है।

द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत मारवाड़ एवं राजस्थान के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास से संबंधित पुस्तकों, अकाल के इतिहास पर आधारित अध्ययनों, शोध–पत्रों, शोध–प्रबंधों तथा

औपनिवेशिक भारत की अकाल नीतियों से संबंधित साहित्य का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों के माध्यम से पूर्ववर्ती शोध की समीक्षा तथा मारवाड़ की अकाल–राहत व्यवस्था को व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

स्रोतों के विश्लेषण में स्रोत–आलोचना एवं तुलनात्मक अध्ययन को विशेष महत्व दिया गया है। सरकारी दस्तावेजों में मुख्यतः राज्य का प्रशासनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत होने के कारण उनके तथ्यों की उपलब्ध अन्य स्रोतों से तुलना की गई है। इस प्रकार स्रोतों के पारस्परिक परीक्षण के आधार पर अकाल, राहत, ग्रामीण प्रवास, आर्थिक संकट, राज्य–प्रजा संबंध तथा सामाजिक पुनर्गठन के बीच अंतर्संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह समझना है कि 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत की अकाल–राहत नीतियों ने तत्कालीन संकट को कम करने के साथ–साथ ग्रामीण समाज की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया।

मारवाड़ की भौगोलिक परिस्थितियाँ और अकाल

मारवाड़ की अर्थव्यवस्था को समझने के लिए उसके भौगोलिक परिवेश को समझना आवश्यक है। 1911 के विवरण में जोधपुर अथवा मारवाड़ को विस्तृत रेतीले मैदान वाला क्षेत्र बताया गया है, जिसके बीच लूणी नदी प्रमुख भौगोलिक विशेषता थी। वर्षा की अनिश्चितता के कारण कृषि उत्पादन में अत्यधिक उतार–चढ़ाव होता था। पर्याप्त वर्षा होने पर कृषि और पशुपालन दोनों को लाभ मिलता था, जबकि वर्षा के असफल होने पर संकट का प्रभाव एक साथ कई क्षेत्रों में दिखाई देता था। इसी कारण मारवाड़ में अकाल को केवल "भोजन की कमी" के रूप में देखना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा। यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमें—

कम वर्षा → फसल विफलता → चारे की कमी → पशुधन संकट → रोजगार संकट → ऋण → प्रवास → सामाजिक तनाव का क्रम विकसित हो सकता था।

1899–1900 का अकाल : 20वीं सदी की पृष्ठभूमि

यद्यपि 1899–1900 का अकाल 19वीं सदी के अंतिम वर्ष में प्रारंभ हुआ, लेकिन उसका प्रभाव 20वीं सदी के आरंभिक मारवाड़ समाज पर पड़ा। इसलिए इस अकाल को 20वीं सदी के अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में देखना आवश्यक है। जोधपुर/मारवाड़ इस अकाल से अत्यंत गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। समकालीन विश्वकोशीय विवरण में उल्लेख है कि 1899–1900 के अकाल ने जोधपुर को राजपूताना के अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत गंभीर रूप से प्रभावित किया तथा फरवरी 1900 में 1,10,000 से अधिक लोग अकाल राहत प्राप्त कर रहे थे। इस संकट का प्रभाव जनसंख्या पर भी पड़ा। 1901 की जनगणना के संदर्भ में जोधपुर राज्य की जनसंख्या में पिछले दशक की तुलना में भारी कमी दर्ज की गई, जिसे अकाल के प्रभाव से जोड़ा गया। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि अकाल का प्रभाव केवल उस वर्ष की कृषि पर नहीं था। उसने जनसंख्या, पशुधन, श्रम और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना को भी प्रभावित किया।

अकाल और पशुधन संकट

मारवाड़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन केवल कृषि का सहायक साधन नहीं था, बल्कि ग्रामीण परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार था। अकाल में जब चरागाह सूख जाते थे और चारे की कीमत बढ़ती थी, तब पशुपालकों के सामने अपने पशुओं को बचाने की समस्या उत्पन्न होती थी। पशुओं की मृत्यु से तत्काल संपत्ति का नुकसान होता था और अगले कृषि चक्र में किसान की उत्पादन क्षमता भी कम हो सकती थी। अकाल–अध्ययन से संबंधित आधुनिक ऐतिहासिक शोध यह दिखाता है कि 1896–1900 के अकालों में पशुधन की भारी क्षति ने ग्रामीण आजीविका, कृषि संरचना और भविष्य की उत्पादन क्षमता को प्रभावित किया। इसलिए मारवाड़ में प्रभावी अकाल राहत के लिए केवल मनुष्यों को भोजन उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं था। पशुओं के लिएकृचारा,पानी,चरागाह,पशु शिविर,सुरक्षित प्रवास जैसी व्यवस्थाएँ भी महत्वपूर्ण थीं।

राहत नीति की बदलती प्रकृति

अकाल राहत की आधुनिक अवधारणा में केवल दान या भोजन वितरण की अपेक्षा रोजगार आधारित राहत को महत्वपूर्ण माना गया। औपनिवेशिक भारत की अकाल नीतियों में सार्वजनिक निर्माण पर रोजगार देना एक प्रमुख उपाय बन चुका था। ऐसी नीति का एक उद्देश्य प्रभावित लोगों को तत्काल आय उपलब्ध कराना तथा दूसरा उद्देश्य सड़क, जल–संरचना और अन्य सार्वजनिक परिसंपत्तियों का निर्माण करना था। मारवाड़ में भी समय के साथ राहत को सार्वजनिक कार्यों और रोजगार से जोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इससे राज्य की भूमिका केवल "दाता" की न रहकर "रोजगार उपलब्ध कराने वाले प्रशासन" के रूप में विकसित होती दिखाई देती है।

महाराजा उमेद सिंह और अकाल राहत

20वीं सदी के मारवाड़ के इतिहास में महाराजा उमेद सिंह का शासन अकाल राहत और सार्वजनिक निर्माण के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। 1920 के दशक में मारवाड़ में गंभीर सूखे और अकाल की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं। उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री के अनुसार 1923 में जोधपुर अकालग्रस्त था और लोगों को भोजन तथा रोजगार की आवश्यकता थी। इसी संदर्भ में उमेद भवन के निर्माण की योजना को रोजगार उपलब्ध कराने वाली सार्वजनिक परियोजना के रूप में देखा जाता है। उमेद भवन का महत्व केवल स्थापत्य की दृष्टि से नहीं है। इसे अकाल के समय सार्वजनिक निर्माण और रोजगार सृजन के उदाहरण के रूप में भी देखा जा सकता है। इससे एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रश्न सामने आता है—

- क्या सार्वजनिक निर्माण केवल राजकीय प्रतिष्ठा का साधन था या संकटग्रस्त ग्रामीण समाज को रोजगार देने का माध्यम भी?
- उपलब्ध स्रोतों के आधार पर कहा जा सकता है कि इस परियोजना में दोनों तत्व मौजूद थे, लेकिन अकाल के समय रोजगार उपलब्ध कराने का सामाजिक पक्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण था।
- उमेद सिंह के आर्थिक सुधारों पर प्रकाशित अध्ययन में भी उनके शासन से जुड़े प्रशासन, वित्त, कृषि, सिंचाई, सार्वजनिक निर्माण तथा अकाल राहत जैसे विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

अकाल, रोजगार और सार्वजनिक निर्माण– अकाल राहत का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष रोजगार था। ग्रामीण व्यक्ति को केवल मुफ्त भोजन देने की अपेक्षा ऐसा कार्य उपलब्ध कराना जिसमें उसे मजदूरी मिले, उसकी आर्थिक गरिमा को बनाए रखने में सहायक हो सकता था। इस संदर्भ में राहत कार्यों को तीन स्तरों पर देखा जा सकता है—प्रथम — तत्काल राहत खाद्यान्न उपलब्ध कराना,गरीब परिवारों को सहायता,पानी की व्यवस्था,पशुओं के लिए चारा

द्वितीय — रोजगार सड़क निर्माण भवन निर्माण,सार्वजनिक निर्माण,जल–संरचनाओं से संबंधित कार्य

तृतीय – दीर्घकालीन पुनर्निर्माण सिंचाई व्यवस्था,जल संरक्षण,परिवहन, कृषि सुधार,ग्रामीण रोजगार इस दृष्टि से अकाल राहत धीरे–धीरे सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में परिवर्तित हो सकती थी।

खाद्यान्न और मूल्य संकट

अकाल के समय खाद्यान्न की उपलब्धता और उसकी कीमत दोनों महत्वपूर्ण प्रश्न थे। फसल विफल होने पर स्थानीय बाजार में अनाज की आपूर्ति कम हो सकती थी, जिससे कीमतें बढ़ती

थीं। औपनिवेशिक भारत में अकाल राहत नीति को लेकर यह बहस रही कि राज्य को खाद्यान्न व्यापार में कितना हस्तक्षेप करना चाहिए। इतिहासकारों ने दिखाया है कि औपनिवेशिक अकाल नीति में वित्तीय मितव्ययिता और बाजार–व्यवस्था की धारणाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव था। मारवाड़ जैसी वर्षा–निर्भर अर्थव्यवस्था में यह समस्या और गंभीर हो सकती थी क्योंकि स्थानीय उत्पादन में कमी के समय बाहरी क्षेत्रों से खाद्यान्न की आपूर्ति आवश्यक हो जाती थी। इस प्रकार रेलवे और परिवहन का विकास भी अप्रत्यक्ष रूप से अकाल प्रबंधन का हिस्सा बन गया।

अकाल और प्रवास

अकाल का एक प्रमुख सामाजिक परिणाम ग्रामीण प्रवास था। जब स्थानीय क्षेत्र में रोजगार और खाद्यान्न दोनों का संकट उत्पन्न होता था, तब परिवार या पशुपालक अपने पशुओं सहित दूसरे क्षेत्रों की ओर जाने के लिए बाध्य हो सकते थे। प्रवास केवल आर्थिक घटना नहीं था। इससे– परिवारों का विखंडन,बच्चों और महिलाओं पर अतिरिक्त जिम्मेदारी,पशुधन का नुकसान,ऋण में वृद्धि, ग्रामीण सामाजिक संबंधों में परिवर्तन जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती थीं। मारवाड़ के संदर्भ में पशुपालक समुदायों के लिए पशुधन के साथ मौसमी अथवा संकट–आधारित प्रवास आजीविका की एक रणनीति भी था। इसलिए अकाल के समय प्रवास को केवल "पलायन" नहीं, बल्कि जीवित रहने की सामाजिक रणनीति के रूप में भी समझा जाना चाहिए।

अकाल और ग्रामीण ऋण

फसल नष्ट होने पर किसान के पास नियमित आय का स्रोत समाप्त हो जाता था। इसके परिणामस्वरूप बीज, भोजन, पशुचारा और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के लिए ऋण लेना पड़ सकता था। अकाल समाप्त होने के बाद भी ऋण का बोझ समाप्त नहीं होता था। इससे किसान की आर्थिक स्वतंत्रता कम होती और ग्रामीण समाज में साहूकार, जमींदार/जागीरदार और किसान के संबंध अधिक जटिल बनते थे। अतः अकाल की वास्तविक आर्थिक लागत केवल उस वर्ष के उत्पादन में कमी नहीं थी, बल्कि आने वाले वर्षों की आय पर भी उसका प्रभाव पड़ता था।

जागीरदारी व्यवस्था और अकाल

मारवाड़ के ग्रामीण समाज में जागीरदारी व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसलिए अकाल राहत का प्रश्न केवल राज्य और किसान के बीच संबंध तक सीमित नहीं था। 1938 के बाद मारवाड़ लोक परिषद ने किसानों की समस्याओं को संगठित राजनीतिक प्रश्न के रूप में उठाया। भारत सरकार के डिजिटल अभिलेख के अनुसार 1939 में परिषद ने अकाल राहत की अपर्याप्तता, किसानों के लंबे समय से चले आ रहे शोषण तथा जागीरदारों द्वारा लगाए गए विभिन्न भारों के प्रश्न को उठाया। इससे स्पष्ट होता है कि 1930द्40 के दशक में अकाल केवल प्राकृतिक आपदा नहीं रहा था; वह राज्य की जवाबदेही और ग्रामीण अधिकारों का प्रश्न भी बन गया था।

1938–42: अकाल से राजनीतिक चेतना तक

1938 में मारवाड़ लोक परिषद का गठन एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके पीछे ग्रामीण समस्याओं, प्रशासनिक सुधारों और प्रजा के अधिकारों की मांग का व्यापक संदर्भ था। 1939–42 के दौरान अकाल और ग्रामीण असंतोष के बीच संबंध अधिक स्पष्ट दिखाई दिया। सरकारी डिजिटल जिला अभिलेख के अनुसार उस समय लंबे सूखे के कारण गंभीर अकाल की स्थिति बनी और राहत कार्यों को लेकर असंतोष बढ़ा। इस अवधि में अकाल ने राज्य और प्रजा के संबंधों को पुनर्परिभाषित करने में योगदान दिया। अब जनता के लिए प्रश्न केवल यह नहीं था कि "राज्य राहत देगा या नहीं", बल्कि यह भी था कि—

- राज्य की जिम्मेदारी क्या है?
- राहत का वितरण किस आधार पर होना चाहिए?
- जागीरदारों और प्रशासन की जवाबदेही क्या होनी चाहिए?
- किसान को अपने संसाधनों और भूमि पर कौन–से अधिकार प्राप्त हैं?

इस प्रकार अकाल ने राजनीतिक चेतना के विस्तार में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई।

राहत व्यवस्था की सीमाएँ

राज्य की राहत नीतियों के बावजूद उनकी अनेक सीमाएँ थीं।
पहली सीमा थी–राहत की उपलब्धता और आवश्यकता के बीच अंतर।
दूसरी–दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तक राहत पहुँचाने की कठिनाई।
तीसरी–प्रशासनिक स्तर पर संसाधनों के वितरण में असमानता।
चौथी—जागीर क्षेत्रों में स्थानीय शक्ति–संरचनाओं का प्रभाव।
पाँचवीं–राहत कार्यों में भ्रष्टाचार अथवा पक्षपात के आरोप।
1939–42 के संबंध में उपलब्ध सरकारी डिजिटल अभिलेख स्वयं राहत कार्यों को अपर्याप्त और भ्रष्टाचार से प्रभावित बताए जाने वाली लोक परिषद की आलोचनाओं को दर्ज करता है। इसलिए राज्य की भूमिका का मूल्यांकन केवल राहत योजनाओं की सूची के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए; वास्तविक प्रभाव को ग्रामीण समाज के अनुभवों के आधार पर भी समझना आवश्यक है।

अकाल और सामाजिक पुनर्गठन

अकाल ने मारवाड़ के समाज में कई दीर्घकालीन परिवर्तन उत्पन्न किए। रोजगार की नई संरचना सार्वजनिक निर्माण परियोजनाओं ने ग्रामीण श्रमिकों के लिए वैकल्पिक रोजगार के अवसर उत्पन्न किए।
प्रवास की प्रवृत्ति अकाल के कारण लोगों और पशुपालकों का दूसरे क्षेत्रों की ओर जाना बढ़ा। राज्य की भूमिका का विस्तार राहत के कारण राज्य को खाद्यान्न, रोजगार, जल, पशुधन और सार्वजनिक निर्माण जैसे क्षेत्रों में हस्तक्षेप करना पड़ा। राजनीतिक चेतना राहत की पर्याप्तता तथा वितरण को लेकर प्रश्नों ने प्रजा और राज्य के संबंधों को प्रभावित किया। सार्वजनिक निर्माण अकाल राहत के लिए किए गए निर्माण कार्यों ने दीर्घकाल में राज्य की आधारभूत संरचना को प्रभावित किया। इस दृष्टि से अकाल को केवल विनाशकारी घटना के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संस्थाओं के पुनर्गठन की प्रक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है।

राज्य और प्रजा के बदलते संबंध

20वीं सदी के आरंभ में राज्य की भूमिका पारंपरिक संरक्षक की थी। परंतु अकालों और आर्थिक संकटों के बढ़ते प्रभाव के साथ जनता की अपेक्षाएँ भी बदलने लगीं। प्रजा के लिए राज्य से केवल सुरक्षा और न्याय की अपेक्षा नहीं रही, बल्किकृ रोजगार,खाद्यान्न, जल,पशुचारा,सिंचाई,सड़क, स्वास्थ्य,शिक्षा जैसी सुविधाओं की अपेक्षा भी बढ़ी। इस परिवर्तन ने धीरे–धीरे "राजकीय कृपा" की अवधारणा को "राजकीय उत्तरदायित्व" की दिशा में आगे बढ़ाया। यही परिवर्तन 1930–40 के दशक में राजनीतिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण था।
अकाल राहत : दान से विकास तक– मारवाड़ में अकाल राहत की ऐतिहासिक प्रक्रिया को मोटे तौर पर तीन चरणों में समझा जा सकता हैकृपहला चरण – राहत एवं सहायता भोजन, पानी, चारा और तत्काल सहायता। दूसरा चरण कृ रोजगार आधारित राहत सार्वजनिक निर्माण और मजदूरी। तीसरा चरण कृ दीर्घकालीन विकास सिंचाई, परिवहन, जल–संरचना और प्रशासनिक सुधार। इस परिवर्तन से स्पष्ट होता है कि अकाल प्रशासन धीरे–धीरे आपदा प्रबंधन से विकास प्रशासन की ओर बढ़ रहा था।

मारवाड़ के इतिहास में उमेद भवन का प्रतीकात्मक महत्व

उमेद भवन को केवल राजसी वास्तुकला के उदाहरण के रूप में देखना इसके सामाजिक इतिहास को सीमित कर देता है। इसके निर्माण की पृष्ठभूमि को अकाल और रोजगार से जोड़ने वाले स्रोत उपलब्ध हैं। 1923 में जोधपुर के अकालग्रस्त होने तथा रोजगार उपलब्ध कराने की आवश्यकता के संदर्भ में इसके निर्माण की कथा सामने आती है। इस दृष्टि से उमेद भवन को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है–

अकाल → रोजगार → सार्वजनिक निर्माण

यह परियोजना इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार संकट के समय सार्वजनिक निर्माण तत्काल रोजगार और दीर्घकालीन परिसंपत्ति–दोनों का माध्यम बन सकता है।

निष्कर्ष

20वीं सदी का मारवाड़ अकाल, राहत और सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन क्षेत्र है। यहाँ अकाल केवल वर्षा की कमी से उत्पन्न खाद्यान्न संकट नहीं था। वह कृषि, पशुधन, रोजगार, ऋण, प्रवास और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करने वाली बहुस्तरीय प्रक्रिया थी। 1899–1900 के अकाल ने मारवाड़ की जनसंख्या और अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव डाला तथा 20वीं सदी के आरंभ में राज्य के सामने अकाल प्रबंधन की चुनौती को स्पष्ट किया। 1920 के दशक में अकाल राहत और रोजगार के संदर्भ में सार्वजनिक निर्माण का महत्व सामने आया। उमेद भवन का निर्माण इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय उदाहरण है। 1938–42 के अकाल संकट ने इस प्रक्रिया को राजनीतिक आयाम प्रदान किया। राहत की अपर्याप्तता, जागीरदारी शोषण और ग्रामीण समस्याएँ राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा बनीं। इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि मारवाड़ में अकाल ने राज्य की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया। राज्य को धीरे–धीरे केवल राजस्व वसूलने वाली सत्ता से आगे बढ़कर राहत, रोजगार, सार्वजनिक निर्माण तथा ग्रामीण पुनर्निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी पड़ी। फिर भी राहत व्यवस्था पूरी तरह समान और प्रभावी नहीं थी। सामाजिक–आर्थिक असमानताओं, जागीरदारी संरचना और प्रशासनिक सीमाओं के कारण राहत का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच सका। अतः 20वीं सदी के मारवाड़ में अकाल को प्राकृतिक संकट, आर्थिक असुरक्षा, प्रशासनिक प्रतिक्रिया और राजनीतिक चेतना के संगम के रूप में देखना अधिक उपयुक्त होगा। अकाल ने जहाँ जनजीवन को गहरा आघात पहुँचाया, वहीं उसने राज्य को नई जिम्मेदारियाँ स्वीकार करने के लिए बाध्य किया और ग्रामीण समाज में अधिकार, उत्तरदायित्व तथा राजनीतिक भागीदारी की नई चेतना के विकास में भी भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची

1. जोधपुर सरकार, मारवाड़ राज्य की जनगणना, 1931: सारणियाँ एवं व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ, जोधपुर राजकीय प्रेस, जोधपुर, 1932।
2. जोधपुर सरकार, मारवाड़ राज्य की जनगणना, 1931: ग्राम निर्देशिका, जोधपुर राजकीय प्रेस, जोधपुर, 1934।
3. फिरोज़ आर. कोठावाला, अकाल कार्यक्रम रिपोर्ट, जोधपुर सरकार, जोधपुर राजकीय प्रेस, 1939।
4. सुखदेव, 1899–1900 में मारवाड़ में किए गए अकाल राहत कार्यों की अंतिम रिपोर्ट, अकाल सचिव, जोधपुर राज्य, 1900।
5. भारत सरकार, 1899–1900 के अकाल राहत कार्यों से संबंधित अभिलेख: देशी रियासतें, खंड II, भारत सरकार, 1900।
6. भारतीय अकाल आयोग, भारतीय अकाल आयोग की रिपोर्ट, 1898, शिमला, 1898।
7. भारतीय अकाल आयोग, भारतीय अकाल आयोग की रिपोर्ट, 1901, कलकत्ता, 1901।
8. राजस्थान सरकार, राजस्थान जिला गजेटियर: जोधपुर, राजस्थान सरकार, सरकारी केंद्रीय प्रेस, जयपुर, 1979। इसमें जोधपुर के इतिहास के साथ कृषि, पशुधन, प्रशासन, जनसंख्या और सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित सामग्री भी मिलती है।
9. विक्रमादित्य चौधरी, राजस्थान में किसान आन्दोलन: मारवाड़ के संदर्भ में, 1920–1955 ई., राजस्थानी साहित्य संस्थान।
10. भारतीय संस्कृति पोर्टल, 1939–1942 में जोधपुर में अकालग्रस्त किसानों का लामबंदीकरण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार। यह स्रोत अकाल, राहत की अपर्याप्तता, कृषक असंतोष तथा मारवाड़ लोक परिषद की भूमिका को समझने में उपयोगी है।
11. भारत सरकार, राजपूताना की रियासतों में 1899–1900 के अकाल संबंधी रिपोर्ट, राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत।
12. राजपूताना एजेंसी, 1896–97 में पश्चिमी राजपूताना की रियासतों में किए गए अकाल राहत कार्यों की रिपोर्ट, राजपूताना एजेंसी।
13. राजपूताना एजेंसी, 1891–92 में मारवाड़, जैसलमेर, बीकानेर एवं किशनगढ़ में किए गए राहत कार्यों की रिपोर्ट, राजपूताना एजेंसी।
14. राजस्थान सरकार, राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति संबंधी राजकीय प्रकाशन, राजस्थान सरकार, जयपुर।
15. भारत सरकार, भारत की जनगणना: राजपूताना एवं जोधपुर राज्य से संबंधित जनगणना रिपोर्टें, भारत सरकार के जनगणना विभाग के विभिन्न वर्ष।